CLASS : 10th (Secondary) **3565/3517**

Series : Sec. M/2018

Total No. of Printed Pages : **8** **SET : A, B, C & D**

MARKING INSTRUCTIONS AND MODEL ANSWERS

MUSIC HINDUSTANI (VOCAL)

(Academic/Open)

(Only for Fresh/Re-appear Candidates)

उप-परीक्षक मूल्यांकन निर्देशों का ध्यानपूर्वक अवलोकन करके उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें। यदि परीक्षार्थी ने प्रश्न पूर्ण व सही हल किया है तो उसके पूर्ण अंक दें।

General Instructions :

(i) *Examiners are advised to go through the general as well as specific instructions before taking up evaluation of the answer-books.*

(ii) *Instructions given in the marking scheme are to be followed strictly so that there may be uniformity in evaluation.*

(iii) *Mistakes in the answers are to be underlined or encircled.*

(iv) *Examiners need not hesitate in awarding full marks to the examinee if the answer/s is/are absolutely correct.*

(v) *Examiners are requested to ensure that every answer is seriously and honestly gone through before it is awarded mark/s. It will*

ensure the authenticity as their evaluation and enhance the reputation of the Institution.

(vi) A question having parts is to be evaluated and awarded partwise.

(vii) If an examinee writes an acceptable answer which is not given in the marking scheme, he or she may be awarded marks only after consultation with the head-examiner.

(viii) If an examinee attempts an extra question, that answer deserving higher award should be retained and the other scored out.

(ix) Word limit wherever prescribed, if violated upto 10%. On both sides, may be ignored. If the violation exceeds 10%, 1 mark may be deducted.

(x) Head-examiners will approve the standard of marking of the examiners under them only after ensuring the non-violation of the instructions given in the marking scheme.

(xi) Head-examiners and examiners are once again requested and advised to ensure the authenticity of their evaluation by going through the answers seriously, sincerely and honestly. The advice, if not headed to, will bring a bad name to them and the Institution.

महत्त्वपूर्ण निर्देश :

(i) *अंक-योजना का उद्देश्य मूल्यांकन को अधिकाधिक वस्तुनिष्ठ बनाना है। अंक-योजना में दिए गए उत्तर-बिन्दु अंतिम नहीं हैं। ये सुझावात्मक एवं सांकेतिक हैं। यदि परीक्षार्थी ने इनसे भिन्न, किन्तु उपयुक्त उत्तर दिए हैं, तो उसे उपयुक्त अंक दिए जाएँ।*

(ii) *शुद्ध, सार्थक एवं सटीक उत्तरों को यथायोग्य अधिमान दिए जाएँ।*

(iii) *परीक्षार्थी द्वारा अपेक्षा के अनुरूप सही उत्तर लिखने पर उसे पूर्णांक दिए जाएँ।*

(iv) *वर्तनीगत अशुद्धियों एवं विषयांतर की स्थिति में अधिक अंक देकर प्रोत्साहित न करें।*

(v) *भाषा-क्षमता एवं अभिव्यक्ति-कौशल पर ध्यान दिया जाए।*

(vi) *मुख्य-परीक्षकों/उप-परीक्षकों को उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करने के लिए केवल Marking Instructions/Guidelines दी जा रही है, यदि मूल्यांकन निर्देश में किसी प्रकार की त्रुटि हो, प्रश्न का उत्तर स्पष्ट न हो, मूल्यांकन निर्देश में दिए गए उत्तर से अलग कोई और भी उत्तर सही हो तो परीक्षक, मुख्य-परीक्षक से विचार-विमर्श करके उस प्रश्न का मूल्यांकन अपने विवेक अनुसार करें।*

SET – A

1. खमाज/Khamaj 1

2. वादी स्वर/Vadi Swara 1

3. चार/Four 1

4. राग वृन्दावनी सारंग में ग - ध स्वर वर्णित हैं जबकि राग देस के आरोह में भी ग - ध स्वर वर्जित रहते हैं। दोनों रागों में ही दोनों निषाद लगते हैं। दोनों में रे - पर स्वरों का संवाद रहता है। 2

5. राग विस्तार की एक क्रिया है जिसमें राग के एक-एक स्वर अथवा मुख्य स्वरों द्वारा विस्तार किया जाता है तथा राग का स्वरूप स्पष्ट किया जाता है। 1

6.

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा	धां	तिं	तिं	ता	ता	धिं	धिं	धा
धधिं	धिंधा	धाधिं	धिंधा	धातिं	तिंग	तधिं	धिधा	धधिं	धिंधा	धाधि	धिंधा	धतिं	तिंता	ताधि	धिंधा
x				2				0				3			

16 मात्राएँ, चार विभाग, प्रत्येक विभाग में चार-चार मात्राएँ, पहली, पाँचवीं, तेरहवीं पर सम दूसरी तथा तीसरी ताली है। नौवीं मात्रा खाली है। यह संगीत की आधारभूत ताल है जिसका संगीत में सर्वाधिक प्रयोग होता है।

7. X, (2, 3, 4), 0 2

सम, तालीयां, खाली

8. As per syllabus................. (जो अध्यापक ने करवाया है)2

9. As per syllabus .... " 2

10. As per syllabus................. " 5

SET – B

1. खमाज (Khamaj) 1

2. संवादी (Samvadi) 1

3. तानपुरा भारतीय संगीत का आधार वाद्य है। गायन संगीत में तो इसका विशेष स्थान है। कहा जाता है इसका सम्बन्ध 'तूंबरु' ऋषि के साथ है। इसलिए इसे तूंबरा भी कहा जाता है। तान को पूर्ण करने के अर्थ से इसका नाम तानपुरा पड़ा। इस से कोई धुन नहीं निकलती बल्कि यह एक संगीत वाद्य (Accompaniment) या संगत वाद्य के रूप में सुर देने का कार्य करता है। इसकी संगति में गायन, वादन बहुत मधुर प्रतीत होता है। 2

4. दोनों रागों के थाट, वादी संवादी, वर्जित स्वर, गायन समय अलग-अलग है। 2

5. वादी-संवादी के अतिरिक्त राग में लगने वाले अन्य स्वर अनुवादी कहलाते हैं। इन्हें प्रजा की संज्ञा दी जाती है।

6.

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा	धां	तिं	तिं	ता	ता	धिं	धिं	धा
धाधिं	धिंधा	धाधिं	धिंधा	धातिं	तिंता	ताधिं	धिधा	धाधिं	धिंधा	धाधि	धिंधा	धातिं	तिंता	ताधि	धिंधा
x				2				0				3			

16 मात्राएं, चार-चार मात्रा के चार विभाग, पहली, पांचवी, तेरहंवी मात्राओं पर सम, दूसरी, तीसरी ताली है तथा नौवीं खाली है यह संगीत की 'आधारभूत ताल है तथा सर्वाधिक प्रयोग की जाने वाली ताल है। 2

7. ⌒ , (पमधप), मग 2

मीड, खटका, कण

8. As per syllabus : (अध्यापक द्वारा करवाये गए कार्य अनुसार) 2

9. As per syllabus 2

10. As per syllabus.... 5

SET – C

---

1. काफी/Kafi 1

2. संवादी/Vadi

3. तानपुरा/Tanpura

4. दोनों के थाट, वादी-संवादी, जाति गायन समय, वर्जित स्वर अलग हैं। 2

5. जिस स्वर को राग में प्रयोग करने से राग का नाश होता है उसे विवादी स्वर कहते हैं। परन्तु कई विद्धान कहते हैं कि यदि विवादी स्वर का सिंचित प्रयोग राग में खूबसूरती से तथा सावधानीपूर्वक किया जाए तो इससे राग का सौन्दर्य भी बढ़ता है। विवादी स्वर को शत्रु के समान माना जाता है। 2

6.

धा	गे	ना	ति	ना	के	धिं	ना
x				0			
धागे	नाति	नाके	धिंना	धानि	नाति	नाके	धिंना
x				0			2

आठ मात्राएं, दो विभाग चार-चार मात्राएं, पहली पर सम् तथा पांचवी पर खाली है। इसका ज्यादातर प्रयोग लोकसंगीत में होता है।

7. शुद्ध स्वर - (कोई चिह्न नहीं) कोमल स्वर (रे), तीव्र - (मे) मन्द्र सप्तक - (प़), मध्य सप्तक (कोई चिह्न नहीं), तार सप्तक - (पं)2

8. As per syllabus – (जैसे कक्षा अध्यापक ने करवाया है) 2

9. As per syllabus – " 2

10. As per syllabus – " 5

SET – D

---

1. काफी/Kafi 1

2. संवादी/Samvadi 1

3. तार वाद्य अथवा तन्त्री वाद्य/string instrument. 1

4. दोनों के थाट, कोमल नी का प्रयोग दोनों में होता है। 2

5. वादी-संवादी के अलावा राग में लगने वाले अन्य स्वर अनुवादी स्वर होते है। इन्हें प्रजा की संज्ञा दी जाती है जबकि विवादी स्वरों का राग में प्रयोग करने से राग का स्वरूप नष्ट होने की संभावना रहती है परन्तु विद्वान मानते हैं कि सही और सिंचित तरीके से विवादी स्वरों को प्रयोग करने से राग की सुन्दरता बढ़ती है। इन्हें शत्रु की उपमा दी जाती है। 2

6.

धा	धि	ना	धा	ति	ना
x			0		
धाधि	नाधा	तिना	धाधि	नाधा	तिना
x			0		

2

6 मात्राएं, दो विभाग, तीन-तीन मात्राएं, पहली पर सम, चौथी पर खाली, इसका प्रयोग दादरा गायन शैली के साथ होता है। इस ताल में गायन मापन करना कठिन होता है।

7. ⌒ , (धपमप), ^{म}ग 2

मीड, खटका, कण

8. As per syllabus .... (जैसा कक्षा अध्यापक ने लिखवाया) 2

9. As per syllabus 2

10. As per syllabus 5